एक कहानी और कि एक पति पत्नी का जोडा था। दोनों का आपस में बहुत प्यार था। पति को किसी काम से कुछ दिन गाँव जाना था। पत्नी नही जाने दे रही थी। कह रही थी - मैं क्या करूंगी? मेरे दिन कैसे बितेंगे? पति ने काफी समझाया और कहा कि देखो, ये मेरी तस्वीर है। इसको देखोगी तो लगेगा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। जब तक मैं लौट के ना आऊँ तुम इसी तस्वीर को खिलाना आदि सेवा करना। तुम्हारा समय भी कटेगा और अकेलापन भी महेसूस नही होगा। पत्नी मान गयी।
कुछ दिन बाद पति लौटा। उसने दरवाजा खटखटाया और कहा - अरी! दरवाजा खोल। मैं तेरा पति आया हूँ। तो स्त्री ने कहा - मैं दरवाजा नही खोलती। मेरा पति मेरे पास है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

वो मूर्ख स्त्री अपने पति से प्यार करने के बजाय पति के तस्वीर से ही प्यार करती थी। ठीक उसी प्रकार इस दुनिया में पति का रिश्ता या सब रिश्ते नकली है। सब स्वार्थ पर आधारित है। यहा तक की अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए बेटा बाप को, पति पत्नी को, भाई भाई को या किसी भी नातेदार को गोली मार देता है। और श्रीकृष्ण का जीव के साथ ऐसा नाता है कि जीव भले ही भगवान को न मानता हो या भगवान को गाली देता हो फिर भी भगवान जीव को अपना बेटा मानते हुए उसके जीवन का प्रबंध उसी तरह करते जैसे भगवान को माननेवाले का करते है। भगवान ऐसा नही करते कि ये जीव मुझे गाली देता है तो इसके लिए मेरी दुनिया का पानी जहर हो जाए। सोचते है आज नही तो कल कभी ना कभी ये सही रास्ते पर आयेगा। इस दुनिया का बाप तो अपने को गाली देने वाले बेटे को घर से बाहर निकाल दे। बाप की मर्जी के खिलाफ काम करो तो बाप अपनी संपत्ति से उसका नाम हटा दे। लेकिन वो बाप बस प्यार ही करता है, जीव भले ही नफरत करे। जो पूतना स्तन में जहर लगाकर श्रीकृष्ण को मारने गयी उसको अपना लोक देकर अनंत काल के लिए दिव्यानंद दिया। क्यूं? तो कहते है कि उसने मेरे मुँह में अपना स्तन दिया तो वो मेरी माँ बन गयी।

कहने का तात्पर्य ये कि इस दुनिया के नाते उसी तस्वीर की तरह तभी तक मान्य है जब तक असली नातेदार भगवान का मिलन नही होता। इसलिए जब असली पति मिल गया तो गोपियाँ नकली पति की सेवा क्यूं करती? पति भी तब तक दारूण दुःख भोगता रहेगा जब तक वो अंतःकरण शुद्धी की साधना कर भगवानवाला दिव्यानंद नही प्राप्त कर लेता।

तो सभी प्रकार से ये सिद्ध हुआ कि श्रीकृष्ण किसी के लिए भी परपुरूष नही है बल्कि परमपुरूष है जो सबके अपने है। वो तो राह देख रहे है कि कब जीव सही बात समझकर मेरी ओर आए और मैं उसको मालामाल कर दूँ। हठी जीव ये मान ले तो उसका काम बन जाए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132